



Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam



an e-magazine on advaita

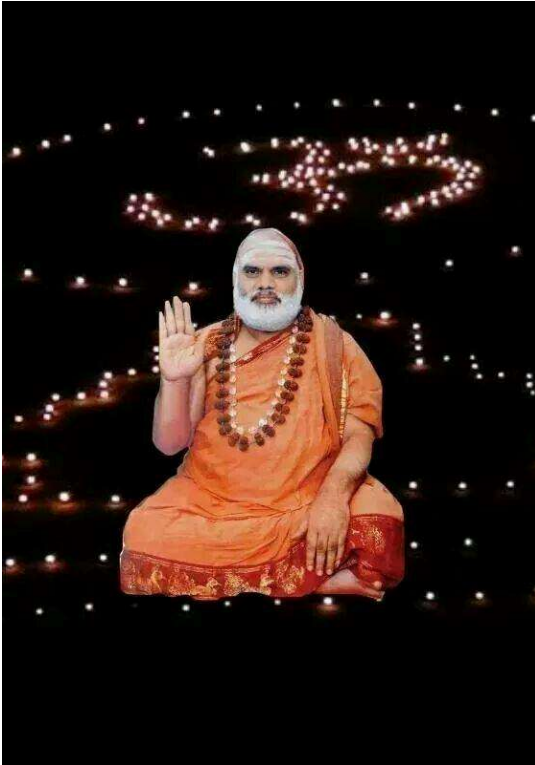


अनुग्रह भाषण

दृढ़ संकल्प के साथ ज्ञान प्राप्त करें

---हर किसी को कम उम्र में ही सीखना शुरू कर देना चाहिए। उस दौरान, सुख-सुविधाओं की कोई इच्छा नहीं होनी चाहिए। जो भी असुविधाएँ हों, उन्हें धैर्य के साथ सहन करना चाहिए। ज्ञान ही एकमात्र लक्ष्य होना चाहिए और उसे प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को दृढ़ संकल्पित होना चाहिए। केवल ऐसा व्यक्ति ही उचित शिक्षा प्राप्त कर पाएगा और एक विद्वान बन सकेगा।

---प्राचीन काल में (समुद्र मंथन से पहले, जिसके परिणामस्वरूप देवताओं को अमरत्व प्राप्त हुआ था), देवता (अदिति के पुत्र) और असुर (राक्षस, दिति के पुत्र) अक्सर आपस में युद्ध करते थे। दोनों ही पक्षों को जान-माल का नुकसान होता था; लेकिन असुरों के गुरु, शुक्राचार्य, 'मृत संजीवनी' (मृत व्यक्तियों को पुनर्जीवित करने की कला) जानते थे। उन्होंने सभी मृत राक्षसों को पुनर्जीवित कर दिया। हालाँकि, देवताओं के गुरु, बृहस्पति, इस कला को नहीं जानते थे। इसलिए वे मृत देवताओं को पुनः जीवित नहीं कर सके। इस स्थिति ने देवताओं को भारी संकट में डाल दिया।



---देवताओं को एक विचार सूझा। उन्होंने बृहस्पति के पुत्र कच को शुक्राचार्य के पास भेजा, ताकि वह उस विद्या को सीख सके। कच शुक्राचार्य का शिष्य बन गया और गुरु की सेवा करने लगा। असुरों को यह बात हज़म नहीं हुई, इसलिए उन्होंने कच को कई तरह से परेशान किया। लेकिन कच ने सब कुछ सहन कर लिया और अपनी गुरु-सेवा जारी रखी।

---अंततः, उसने 'मृत संजीवनी' विद्या सीख ली और जब भी युद्धों में देवता मारे जाते, तो वह उन्हें पुनर्जीवित कर देता। इस बात का उल्लेख महाभारत में मिलता है।

---अतः, जो व्यक्ति ज्ञान के मार्ग पर आने वाली कठिनाइयों को सहन करता है और सीखने में दृढ़ रहता है, वह जीवन में अवश्य सफल होता है और सभी की सराहना प्राप्त करता है।

विद्योद्योगी गतोद्वेगः सेवया तोषयेद्गुरुम् ।

गुरुसेवापरः सेहे कायक्लेशदशां कचः ॥

vidyōdyōgī gatōdvēgaḥ sēvayā tōṣayēdgurum |

gurusēvāparaḥ sēhē kāyāklēśadaśāṁ kacaḥ ||

--जगद्गुरु शंकराचार्य परम पूज्य महासन्निधानं श्री श्री श्री भारती तीर्थ महास्वामीजी



Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam



an e-magazine on advaita



॥आत्मबोधः॥

॥ātmabodhaः॥

आविद्यकं शरीरादि दृश्यं बुद्बुदवत्क्षरम्।
एतद्विलक्षणं विद्यादहं ब्रह्मेति निर्मलम् ॥३१॥

शरीर आदि से लेकर 'कारण शरीर' (Causal Body)—अर्थात् अज्ञान—तक, जो कुछ भी प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है, वह सब बुलबुलों की तरह ही नश्वर है। विवेक द्वारा यह अनुभव करो कि मैं 'शुद्ध ब्रह्म' हूँ, जो इन सबसे सदैव पूर्णतः पृथक है।

देहान्यत्वान्न मे जन्मजराकाश्रयलयादयः।
शब्दादिविषयैः सङ्गो निरिन्द्रियतया न च ॥३२॥



मैं शरीर से भिन्न हूँ, और इसलिए मैं जन्म, झुर्रियाँ, बुढ़ापा, मृत्यु आदि जैसे परिवर्तनों से मुक्त हूँ। ध्वनि और स्वाद जैसे इंद्रिय-विषयों से मेरा कोई लेना-देना नहीं है, क्योंकि मैं इंद्रियों से रहित हूँ।

His Holiness 35th Jagadguru
Shankaracharya Sri Abhinavavidya Tirtha
Mahaswamiji,

परम पूज्य ३५वें जगद्गुरु शंकराचार्य श्री
अभिनवविद्या तीर्थ महास्वामीजी

अमनस्त्वान्न मे दुःखरागद्वेषभयादयः।
अप्राणो ह्यमनाः शुभ्र इत्यादिश्रुतिशासनात् ॥३३॥

मैं मन से भिन्न हूँ, और इसलिए मैं शोक, आसक्ति, द्वेष तथा भय से मुक्त हूँ; क्योंकि महान शास्त्र—उपनिषदों—का यही आदेश है कि "वह (परमात्मा) प्राण-रहित और मन-रहित है, तथा पूर्णतः शुद्ध है।"

(जारी रहेगा...)

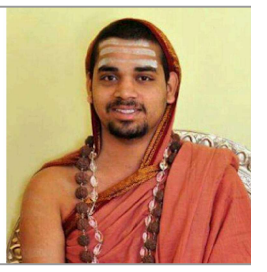


Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam



an e-magazine on advaita



धर्मशास्त्र का मार्ग

इस भाग में हम प्रश्नोत्तर रूप में "धर्मशास्त्र का मार्ग" देखेंगे। "धर्मशास्त्र" से संबंधित हमारी शंकाओं के समाधान के लिए, पूज्यश्री स्वामी ओंकारानंद सरस्वती, संस्थापक आचार्य, श्री स्वामी चिन्मयानंद आश्रम, वेदपुरी, थेनी, वैदिक शास्त्रों के अनुसार हमारा मार्गदर्शन करेंगे।

प्रश्न: स्वामीजी, क्या जप करने का हमारे लिए कोई विशेष तरीका है? भगवान के नाम का जप कैसे करना चाहिए? क्या हम बिस्तर पर लेटे-लेटे भी जप कर सकते हैं—मान लीजिए, अगर हमें नींद नहीं आ रही हो? यदि हाँ, तो क्या जप



माला लेकर लेटे हुए, सोने से पहले या नींद लाने की कोशिश करते हुए जप करना सही है?

स्वामीजी: हाँ, जप करने का एक निश्चित तरीका है। व्यक्ति को किसी गुरु से मंत्र दीक्षा लेनी चाहिए और सही समय पर तथा सही स्थान पर मंत्र का जप करना चाहिए। जप के लिए कुछ सामान्य और कुछ विशेष नियम होते हैं।

आम तौर पर, जप करते समय व्यक्ति को उत्तर दिशा की ओर मुँह करके बैठना चाहिए। व्यक्ति को निर्धारित विधि से न्यास करने चाहिए और मंत्रों का जाप धीरे-धीरे, मन ही मन करना चाहिए। पुरुष जप शुरू करने से पहले न्यास कर सकते हैं, जबकि स्त्रियाँ ध्यान श्लोक का पाठ करके जप कर

सकती हैं। दैनिक जप को अपनी दिनचर्या का एक हिस्सा मानते हुए, उचित विधि से किया जाना चाहिए। बैठे हुए या सोने जाने से पहले, भगवान के नाम का जाप करने में कोई बुराई नहीं है।

तथापि, यह उस मुख्य जप का विकल्प नहीं बन सकता, जिसे निर्धारित समय पर ही किया जाना चाहिए। अतिरिक्त जप किसी भी समय किया जा सकता है। जब नींद न आ रही हो या किसी अन्य खाली समय में जप करना सदैव हितकर होता है। परंतु व्यक्ति को प्रतिदिन, निर्धारित विधि से और पूरा समय देते हुए जप करना कभी नहीं भूलना चाहिए।

चूँकि जप का संस्कार मन में विद्यमान होता है, इसलिए खाली समय में मन स्वतः ही जप करने लगता है।

परम पूज्य जगद्गुरु शंकराचार्य महासन्निधानाम् श्री श्री श्री भारतीतीर्थ महास्वामीजी, परम पूज्य जगद्गुरु शंकराचार्य सन्निधानाम् श्री श्री श्री विधुशेखर भारती महास्वामीजी और पूज्यश्री स्वामी ओंकारानंद सरस्वती, संस्थापक आचार्य, श्री स्वामी चिन्मयानंद आश्रम @ वेदपुरी, थेनी 15 अप्रैल - 17, 2017 (विजय यात्रा)

प्रश्न: वासना क्या है? क्या हम वासना को पैदा करते हैं या विकसित करते हैं?

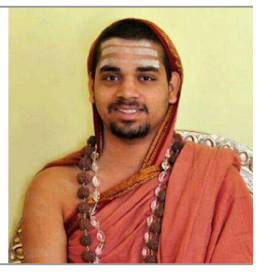


Voice of Jagadguru

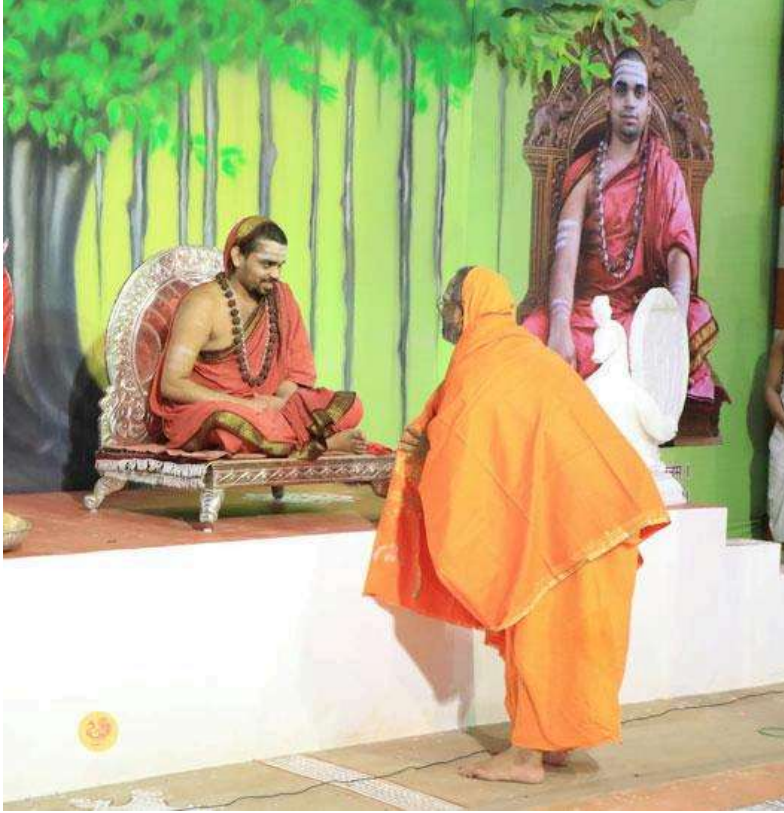
advaitam paramanandam



an e-magazine on advaita



स्वामीजी: हम कुछ काम अनजाने में या कभी-कभी बिना सोचे-समझे भी करते हैं, ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हमारे मन में अतीत की कुछ छापें (registrations) मौजूद होती हैं। हम जो भी काम करते हैं, उससे हमारे मन में एक छाप बन जाती है। इसका असर हमारे भविष्य के कामों पर भी पड़ता है। किसी खास काम की वजह से मन में जो छाप बनती है, उसे ही 'वासना' कहते हैं।



इसीलिए, शास्त्र और बड़े-बुजुर्ग कहते हैं कि हमें अपने विचारों, शब्दों और कर्मों के प्रति बहुत सावधान रहना चाहिए।

उदाहरण के लिए, डॉक्टर किसी मरीज़ को मीठा खाने से मना करता है। लेकिन, मरीज़ को मीठा खाने की ज़बरदस्त तलब होती है। मन और बुद्धि के बीच एक रस्साकशी शुरू हो जाती है। बुद्धि चेतावनी देती है कि यह सेहत के लिए अच्छा नहीं है। लेकिन मन उसे लगातार यह कहकर मनाता रहता है कि, कभी-कभार, यह ठीक है। और आखिर में, मन जीत जाता है, यह वासना के कारण होता है।

परम पूज्य जगद्गुरु शंकराचार्य सन्निधानाम् श्री श्री श्री विधुशेखर भारती महास्वामीजी और पूज्यश्री स्वामी ओंकारानंद सरस्वती, संस्थापक आचार्य, श्री स्वामी चिद्भवानंद आश्रम @ वेदपुरी, थेनी 15 अप्रैल - 17, 2017 (विजय यात्रा)

Vaasana is defined as follows –

दृढभावनया त्यक्त पूर्वापरविचारणम्।

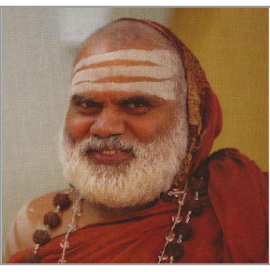
यदादानं पदार्थस्य वासना सा प्रकीर्तिता॥

dr̥ḍhabhāvanayā tyakta pūrvāparavicāraṇam |

yadādānaṃ padārthasya vāsanā sā prakīrtitā||

वासना वह है, जिसके कारण व्यक्ति अपनी विवेक-शक्ति खो देता है और किसी विशेष वस्तु से लिपट जाता है। यह श्लोक योग वशिष्ठ (श्लोक 91-29), मुक्तिकोपनिषद (श्लोक 57) और अन्नपूर्णा उपनिषद (श्लोक 46) जैसे कई ग्रंथों में मिलता है।

(जारी रहेगा..)



Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam



an e-magazine on advaita



पूजा विधान

Pooja Vidhānam.

DD. देवता के सामने जलता हुआ दीपक घुमाना

1. देवता के सामने जलते हुए दीपक को तीन बार घड़ी की दिशा में घुमाना चाहिए, और साथ ही बाएं हाथ से घंटी बजानी चाहिए।
2. दीपक जलाते समय याद रखने योग्य बातें
एक जलते हुए दीपक से दूसरा दीपक नहीं जलाना चाहिए।
तेल के दीपक का उपयोग घी का दीपक जलाने के लिए नहीं करना चाहिए।
घर के मंदिर में रखे दीपक की बत्ती रोज़ बदलनी चाहिए।

E. देवता को नैवेद्य अर्पित करना

1. नैवेद्य बनाते समय, लाल मिर्च पाउडर, नमक और तेल का कम मात्रा में उपयोग करना चाहिए; घी (शुद्ध मक्खन) जैसे सात्विक पदार्थों का उपयोग भरपूर मात्रा में करना चाहिए।
2. नैवेद्य अर्पित करने के लिए केले के पत्ते का उपयोग करना चाहिए।
3. देवता को नैवेद्य के लिए तैयार किए गए पत्ते पर नमक नहीं परोसना चाहिए।
4. उस पत्ते को (जिस पर नैवेद्य परोसा गया है) ढककर रखना चाहिए।
5. नैवेद्य अर्पित करते समय, सबसे पहले अपने इष्ट देवता से प्रार्थना करें और देवता के सामने ज़मीन पर एक मंडल (घेरा या सुरक्षा कवच) बनाएं। फिर नैवेद्य वाला केले का पत्ता (या थाली) इस मंडल पर इस तरह रखें कि पत्ते का डंठल देवता की ओर हो और पत्ते का अगला सिरा आपकी ओर हो।
6. नैवेद्य अर्पित करते समय, केले के पत्ते या थाली के चारों ओर घड़ी की दिशा में केवल एक बार पानी छिड़कना चाहिए (इस क्रिया को मंडल बनाना कहते हैं)। पानी दोबारा घड़ी की विपरीत दिशा में नहीं छिड़कना चाहिए।

Our Website link : <https://voiceofjagadguru.com/voj/>

Telegram Channel : <https://t.me/voiceofjagadguru>

Instagram Channel :

https://www.instagram.com/stories/voice_of_jagadguru_voj/3601249542534134684?igsh=MW90YW13N2c5b2hqaA==

WhatsApp Community Channel: <https://chat.whatsapp.com/Ly4wlaTu8Kc3sjiEYU8KGU>

YouTube Channel : <https://youtube.com/@jagad-guru-channel?si=brkLFqiz8sZJ6UII>



Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam



an e-magazine on advaita



Editorial Board		
Sri P A Murali	Hon' Advisor	Administrator & CEO, Sri Sringeri Mutt & It's Properties, Sringeri
Sri S N Krishnamurthy	Hon' Editor	Sri Sringeri Mutt, Sringeri
Sri Tangirala Shiva Kumara Sharma	Hon' Editor	Sri Sringeri Mutt, Sringeri
Sri B Vijay Anand	Web Director	Coimbatore
Smt B Srimathi Veeramani	Web Asst Director & Chief Editor	Tirunelveli
Sri K M Kasiviswanathan	Hon' Editor	Tirunelveli
Sri M Venkatachalam & Team	Translator/writer	Tiruvananthapuram